

>

Title: Need to provide age relaxation and other service benefits to SSB volunteers on the lines of the facilities given to them in Manipur.

डॉ. राजन सुशान्त : आदरणीय सभापति जी, आज मैं आपके माध्यम से सदन में देश के पांच राज्यों में रहने वाले हजारों एसएसबी वालंटियर्स का महत्वपूर्ण मुद्दा उठा रहा हूँ। यह गोरिल्ला स्वयंसेवक पिछले पांच वर्षों से आंदोलित हैं। इसका गठन 1962 में जब चीन से भारत हारा था, तो उसके बाद परिस्थितियों को ध्यान में रखकर देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा किया गया था। इसके अन्तर्गत अंतर्राष्ट्रीय सीमा से लगे नागरिकों का चयन किया जाता था। उन्हें सड़फल, छापामार युद्ध का प्रशिक्षण दिया जाता था। शांति काल में, युद्धकाल में और युद्ध काल के बाद भी इनकी भूमिका निर्धारित की गयी थी और यहां तक कि युद्ध में हार के बाद अगर नियमित सेना भी पीछे हट जाती है, तो ऐसी स्थिति में भी दुश्मन से छापामार युद्ध करके उसे अपनी धरती से खदेड़ने की जिम्मेदारी उन्हें दी गयी थी। लेकिन मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि पिछले पांच सालों से ये सारे के सारे स्वयंसेवक आंदोलित हैं। सरकार इनकी ओर ध्यान नहीं दे रही है। इनकी जो समस्याएं हैं, उन्हें मैं आपके ध्यान में लाना चाहता हूँ।

सभापति महोदय, इनकी मांग है कि मणिपुर की भांति इनकी आयु सीमा में भी छूट दे दी जाये और एसएसबी में स्थायी नियुक्ति दी जाये। एसएसबी की प्रस्तावित भर्तियों में एसएसबी स्वयंसेवकों को भी भर्ती किया जाये। नौकरी की आयु सीमा पार कर चुके अथवा भर्ती न हो सकने वाले एवं मृतक स्वयंसेवकों की विधवाओं और विधुओं को सम्मानजनक पेंशन दी जाये। बीमार एवं आर्थिक रूप से कमजोर स्वयंसेवकों को शीघ्र आर्थिक मदद दी जाये। राज्य सरकारों में वन विभाग के अंतर्गत फॉरेस्ट गार्ड की भर्ती में तथा पुलिस आदि बलों में भी इन्हें भर्ती का कोटा आरक्षित किया जाये। सेना व अर्द्ध सैनिक बलों की भांति अन्य सुविधाएं भी दी जायें।

मैं भारत सरकार से मांग करता हूँ कि ये सारी फाइल अब निर्णय की स्थिति में आ गयी है। डायरेक्टर जनरल ने भी इनका समर्थन किया है, सारे सांसद भी समर्थन कर रहे हैं। सीमावर्ती राज्यों का जो मसला है, वह देश की सुरक्षा से जुड़ा है। इसलिए मैं इनकी मांगों का भरपूर समर्थन करता हूँ।

MR. CHAIRMAN:

Shri Virender Kashyap and

Shri Rajendra Agrawal are allowed to associate with the matter raised by Dr. Rajan Sushant.